

**प्रश्न :**

1. चित्र में बच्चे बहुत खुश दिखायी दे रहे हैं। अनुमान लगाओ कि बच्चे खुश क्यों हुए होंगे?
2. चित्र में बूढ़ी औरत क्या कर रही है?
3. अपनी दादीजी के बारे में बताओ।

छात्रों के लिए सूचनाएँ :

1. पाठ पढ़ो। कठिन शब्द और वाक्य रेखांकित करो।
2. कठिन शब्दों और वाक्यों के बारे में मित्रों से चर्चा करो।
3. कठिन शब्दों के अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़ो।

क

मजोरी ही है अपनी, पर सच तो यह है कि ज़रा-सी कठिनाई पड़ते; बीसों गरमी, बरसात और वसंत देखने के बाद भी, मेरा मन सदा नहीं तो प्रायः अनमना-सा हो जाता है। मेरे शुभचिंतक मित्र मुँह पर मुझे प्रसन्न करने के लिए आनेवाली छुट्टियों की सूचना देते हैं और पीठ पीछे मुझे कमजोर और ज़रा-सी प्रतिकूलता से घबरानेवाला कहकर मेरा मज़ाक उड़ाते हैं। मैं सोचता हूँ, 'अच्छा, अब कभी उन बातों को न सोचूँगा। ठीक है, जाने दो, सोचने से होता ही क्या है'। पर, बरबस मेरी आँखों के सामने शरद की शीत किरणों के समान स्वच्छ, शीतल किसी की धुँधली छाया नाच उठती है।

मुझे लगता है जैसे क्वार के दिन आ गए हैं। मेरे गाँव के चारों ओर पानी ही पानी हिलोरें ले रहा है। दूर के सिवान से बहकर आए हुए मोथा और साई की अधगली घासों, घेऊर और बनप्याज की



जड़ें तथा नाना प्रकार की बरसाती घासों के बीज, सूरज की गरमी में खौलते हुए पानी में सड़कर एक विचित्र गंध छोड़ रहे हैं। रास्तों में कीचड़ सूख गया है और गाँव के लड़के किनारों पर झागभरे जलाशयों में धमाके से कूद रहे हैं। अपने-अपने मौसम की अपनी-अपनी बातें होती हैं। आषाढ़ में आम और जामुन न मिलें, चिंता नहीं, अगहन में चिउड़ा और गुड़ न मिले, दुख नहीं, चैत के दिनों में लाई के साथ गुड़ की पट्टी न मिले, अफ़सोस नहीं, पर क्वार के दिनों में इस गंधपूर्ण झागभरे जल में कूदना न हो तो बड़ा बुरा मालूम होता है। मैं भीतर हुड़क रहा था। दो-एक दिन ही तो कूद सका था, नहा-धोकर बीमार हो गया। हलकी बीमारी न

जाने क्यों मुझे अच्छी लगती है। थोड़ा-थोड़ा ज्वर हो, सर में साधारण दर्द और खाने के लिए दिनभर नींबू और साबू। लेकिन इस बार ऐसी चीज़ नहीं थी। ज्वर जो चढ़ा तो चढ़ता ही गया। रज़ाई पर रज़ाई—और उतरा रात बारह बजे के बाद।

दिन में मैं चादर लपेटे सोया था। दादी माँ आई, शायद नहाकर आई थीं, उसी झागवाले जल में। पतले-दुबले स्नेह-सने शरीर पर सफ़ेद किनारीहीन धोती, सन-से सफ़ेद बालों के सिरों पर सद्यः टपके हुए जल की शीतलता। आते ही उन्होंने सर, पेट छुए। आँचल की गाँठ खोल किसी अदृश्य शक्तिधारी के चबूतरे की मिट्टी मुँह में डाली, माथे पर लगाई। दिन-रात चारपाई के पास बैठी रहतीं, कभी पंखा झलतीं, कभी जलते हुए हाथ-पैर कपड़े से सहलातीं, सर पर दालचीनी का लेप करतीं और बीसों बार छू-छूकर ज्वर का अनुमान करतीं। हाँडी में पानी आया कि नहीं? उसे पीपल की छाल से छौंका कि नहीं? खिचड़ी में मूँग की दाल एकदम मिल तो गई है? कोई बीमार के घर में सीधे बाहर से आकर तो नहीं चला गया, आदि लाखों प्रश्न पूछ-पूछकर घरवालों को परेशान कर देतीं।

दादी माँ को गँवई-गाँव की पचासों किस्म की दवाओं के नाम याद थे। गाँव में कोई बीमार होता, उसके पास पहुँचतीं और वहाँ भी वही काम। हाथ छूना, माथा छूना, पेट छूना। फिर भूत से लेकर



मलेरिया, सरसाम, निमोनिया तक का अनुमान विश्वास के साथ सुनातीं। महामारी और विशूचिका के दिनों में रोज़ सवेरे उठकर स्नान के बाद लवंग और गुड़-मिश्रित जलधार, गुग्गल और धूप। सफ़ाई कोई उनसे सीख ले। दवा में देर होती, मिश्री या शहद खत्म हो जाता, चादर या गिलाफ़ नहीं बदले जाते, तो वे जैसे पागल हो जातीं। बुखार तो मुझे अब भी आता है। नौकर पानी दे जाता है, मेस-महाराज अपने मन से पकाकर खिचड़ी या साबू। डॉक्टर साहब आकर नाड़ी देख जाते हैं और कुनैन मिक्सचर की शीशी की तिताई के डर से बुखार भाग भी जाता है, पर न जाने क्यों ऐसे बुखार को बुलाने का जी नहीं होता!

किशन भैया की शादी ठीक हुई, दादी माँ के उत्साह और आनंद का क्या कहना! दिनभर गायब रहतीं। सारा घर जैसे उन्होंने सर पर उठा लिया हो। पड़ोसिन आतीं। बहुत बुलाने पर दादी माँ आतीं, “बहिन बुरा न मानना। कार-परोजन का घर ठहरा। एक काम अपने हाथ से न करूँ, तो होनेवाला नहीं।” जानने को यों सभी जानते थे कि दादी माँ कुछ करतीं नहीं। पर किसी काम में उनकी अनुपस्थिति वस्तुतः विलंब का कारण बन जाती। उन्हीं दिनों की बात है। एक दिन दोपहर को मैं घर लौटा। बाहरी निकसार में दादी माँ किसी पर बिगड़ रही थीं। देखा, पास के कोने में दुबकी रामी की चाची खड़ी है। “सो न होगा, धन्नो! रुपये मय सूद के आज दे दे। तेरी आँख में तो शरम है नहीं। माँगने के समय कैसी आई थी! पैरों पर नाक रगड़ती फिरी, किसी ने एक पाई भी न दी। अब लगी है आजकल करने-फसल में दूँगी, फसल में दूँगी...अब क्या तेरी खातिर दूसरी फसल कटेगी?”

“दूँगी, मालकिन!” रामी की चाची रोती हुई, दोनों हाथों से आँचल पकड़े दादी माँ के पैरों की ओर झुकी, “बिटिया की शादी है। आप न दया करेंगी तो उस बेचारी का निस्तार कैसे होगा!”

“हट, हट! अभी नहाके आ रही हूँ!” दादी माँ पीछे हट गईं।





“जाने दो दादी,” मैंने इस अप्रिय प्रसंग को हटाने की गरज से कहा, “बेचारी गरीब है, दे देगी कभी।”

“चल, चल! चला है समझाने...”

मैं चुपके से आँगन की ओर चला गया। कई दिन बीत गए, मैं इस प्रसंग को एकदम भूल-सा गया। एक दिन रास्ते में रामी की चाची मिली। वह दादी को ‘पूतों फलो दूधों नहाओ’ का आशीर्वाद दे रही थी! मैंने पूछा, “क्या बात है, धनो चाची”, तो उसने विह्वल होकर कहा, “उरिन हो गई बेटा, भगवान भला करे हमारी मालकिन का। कल ही आई थीं। पीछे का सभी रुपया छोड़ दिया, ऊपर से दस रुपये का नोट देकर बोलीं, ‘देखना धनो, जैसी तेरी बेटी वैसी मेरी, दस-पाँच के लिए हँसाई न हो।’ देवता है बेटा, देवता।”

“उस रोज़ तो बहुत डाँट रही थीं?” मैंने पूछा।

“वह तो बड़े लोगों का काम है बाबू, रुपया देकर डाँटें भी न तो लाभ क्या!”

मैं मन-ही-मन इस तर्क पर हँसता हुआ आगे बढ़ गया।

किशन के विवाह के दिनों की बात है। विवाह के चार-पाँच रोज़ पहले से ही औरतें रात-रातभर गीत गाती हैं। विवाह की रात को अभिनय भी होता है। यह प्रायः एक ही कथा का हुआ करता है, उसमें विवाह से लेकर पुत्रोत्पत्ति तक के सभी दृश्य दिखाए जाते हैं—सभी पार्ट औरतें ही करती हैं। मैं बीमार होने के कारण बारात में न जा सका। मेरा ममेरा भाई राघव दालान में सो रहा था (वह भी बारात जाने के बाद पहुँचा था)। औरतों ने उस पर आपत्ति की।

दादी माँ बिगड़ीं, “लड़के से क्या परदा? लड़के और बरह्मा का मन एक-सा होता है।”

मुझे भी पास ही एक चारपाई पर चादर उढ़ाकर दादी माँ ने चुपके से सुला दिया था। बड़ी हँसी आ रही थी। सोचा, कहीं ज़ोर से हँस दूँ, भेद खुल जाए तो निकाल बाहर किया जाऊँगा, पर भाभी की बात पर हँसी रुक न सकी और भंडाफोड़ हो गया।

देबू की माँ ने चादर खींच ली, “कहो दादी, यह कौन बच्चा सोया है। बेचारा रोता है शायद, दूध तो पिला दूँ।” हाथापाई शुरू हुई। दादी माँ बिगड़ीं, “लड़के से क्यों लगती है!”

सुबह रास्ते में देबू की माँ मिलीं, “कल वाला बच्चा, भाभी!” मैं वहाँ से ज़ोर से भागा और दादी माँ के पास जा खड़ा हुआ। वस्तुतः किसी प्रकार का अपराध हो जाने पर जब हम दादी माँ की छाया में खड़े हो जाते, अभयदान मिल जाता।

स्नेह और ममता की मूर्ति दादी माँ की एक-एक बात आज कैसी-कैसी मालूम होती है। परिस्थितियों का वात्स्याचक्र जीवन को सूखे पत्ते-सा कैसा नचाता है, इसे दादी माँ खूब जानती थीं। दादा की मृत्यु के बाद से ही वे बहुत उदास रहतीं। संसार उन्हें धोखे की टट्टी मालूम होता। दादा ने उन्हें स्वयं जो धोखा दिया। वे सदा उन्हें आगे भेजकर अपने पीछे जाने की झूठी बात कहा करते थे। दादा की मृत्यु के बाद कुकुरमुत्ते की तरह बढ़नेवाले, मुँह में राम बगल में छुरीवाले दोस्तों की शुभचिंता ने स्थिति और भी डाँवाडोल कर दी। दादा के श्राद्ध में दादी माँ के मना करने पर भी पिता



जी ने जो अतुल संपत्ति व्यय की, वह घर की तो थी नहीं।

दादी माँ अकसर उदास रहा करतीं। माघ के दिन थे। कड़ाके का जाड़ा पड़ रहा था। पछुवा का सन्नाटा और पाले की शीत हड्डियों में घुसी पड़ती। शाम को मैंने देखा, दादी माँ गीली धोती पहने, कोनेवाले घर में एक सन्दूक पर दिया जलाए, हाथ जोड़कर बैठी हैं। उनकी स्नेह-कातर आँखों में मैंने आँसू कभी नहीं देखे थे। मैं बहुत देर तक मन मारे उनके पास बैठा रहा। उन्होंने आँखें खोलीं। “दादी माँ!”, मैंने धीरे से कहा।

“क्या है रे, तू यहाँ क्यों बैठा है?”

“दादी माँ, एक बात पूछूँ, बताओगी न?” मैंने उनकी स्नेहपूर्ण आँखों की ओर देखा।



“क्या है, पूछा।”

“तुम रोती थीं?”

दादी माँ मुसकराई, “पागल, तूने अभी खाना भी नहीं खाया न, चल-चल!”

“धोती तो बदल लो, दादी माँ”, मैंने कहा।

“मुझे सरदी-गरमी नहीं लगती बेटा।” वे मुझे खींचती रसोई में ले गईं।

सुबह मैंने देखा, चारपाई पर बैठे पिता जी और किशन भैया मन मारे कुछ सोच रहे हैं। “दूसरा चारा ही क्या है?” बाबू बोले, “रुपया कोई देता नहीं। कितने के तो अभी पिछले भी बाकी हैं!” वे रोने-रोने-से हो गए।

“रोता क्यों है रे!” दादी माँ ने उनका माथा सहलाते हुए कहा, “मैं तो अभी हूँ ही।” उन्होंने सन्दूक

खोलकर एक चमकती-सी चीज़ निकाली, “तेरे दादा ने यह कंगन मुझे इसी दिन के लिए पहनाया था।” उनका गला भर आया, “मैंने इसे पहना नहीं, इसे सहेजकर रखती आई हूँ। यह उनके वंश की निशानी है।” उन्होंने आँसू पोंछकर कहा, “पुराने लोग आगा-पीछा सब सोच लेते थे, बेटा।”

सचमुच मुझे दादी माँ शापभ्रष्ट देवी-सी लगीं।



धुँधली छाया विलीन हो गई। मैंने देखा, दिन काफ़ी चढ़ आया है। पास के लंबे खजूर के पेड़ से उड़कर एक कौआ अपनी घिनौनी काली पाँखें फैलाकर मेरी खिड़की पर बैठ गया। हाथ में अब भी किशन भैया का पत्र काँप रहा है। काली चींटियों-सी कतारें धूमिल हो रही हैं। आँखों पर विश्वास नहीं होता। मन बार-बार अपने से ही पूछ बैठता है—‘क्या सचमुच दादी माँ नहीं रहीं?’

□ शिवप्रसाद सिंह



सुनिए-बोलिए

1. लेखक को अपनी दादी माँ की याद क्यों आती है? आप को किसकी याद आती है?
2. अपने बचपन की कोई ऐसी घटना बताइए जिसे आप हमेशा याद रखना चाहेंगे?
3. आपको अपने घर में किसका स्वभाव अच्छा लगता है? क्यों?





पढ़िए

- वाक्यों को क्रम (1, 2,.....7) दीजिए।
दादी माँ अक्सर उदास रहा करती थीं। ()
'क्या सचमुच दादी माँ नहीं रहीं?' ()
किशन के विवाह के दिनों की बात है। ()
औरतों ने उस पर आपत्ति की। ()
बुखार तो मुझे अब भी आता है। ()
रजाई पर रजाई और उतरा रात बारह बजे के बाद। ()
- पाठ से पाँच विस्मयादि बोधक वाले वाक्य लिखिए। जैसे- 'रोता क्यों है रे!'



लिखिए

- लेखक को अपनी दादी माँ की याद के साथ-साथ बचपन की और किन-किन बातों की याद आ जाती है?
- दादी माँ के स्वभाव का कौन-सा पक्ष आपको सबसे अच्छा लगता है?
- दादा की मृत्यु के बाद लेखक के घर की आर्थिक स्थिति खराब क्यों हो गयी थी?



शब्द भंडार

रेखांकित शब्दों के पर्याय लिखकर दो-दो वाक्य बनाइए।

- सूरज की गरमी में खौलते हुए पानी में सड़कर एक विचित्र गंध छोड़ रहे हैं।
- आप न दया करेंगी तो उस बेचारी का निस्तार कैसे होगा।
- स्नेह और ममता की मूर्ति दादी माँ की एक-एक बात आज कैसी-कैसी मालूम होती है।



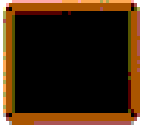
सृजनात्मक अभिव्यक्ति

दादी माँ किस प्रकार से बातें करती हैं? अभिनय के साथ प्रस्तुत कीजिए।



प्रशंसा

घर में बड़े-बुजुर्गों का विशेष महत्व है। दादी माँ कहानी के माध्यम से आप इसे समझ ही गये होंगे। अपनी दादी माँ की प्रशंसा करते हुए दस वाक्य लिखिए।



भाषा की बात

- इन पंक्तियों पर ध्यान दीजिए।
ज़रा-सी कठिनाई पड़ते
अनमना-सा हो जाता है
सन-से सफेद
-समानता का बोध कराने के लिए सा, सी, से का प्रयोग किया जाता है। ऐसे पाँच और शब्द लिखिए और उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए।
- कहानी में 'छू-छूकर ज्वर का अनुमान करतीं, पूछ-पूछकर घरवालों को परेशान कर देतीं' -जैसे वाक्य आये हैं। किसी क्रिया को ज़ोर देकर कहने के लिए एक से अधिक बार एक ही शब्द का प्रयोग होता है। जैसे-वहाँ जा-जाकर थक गया, उन्हें ढूँढ़-ढूँढ़ कर देख लिया। इस प्रकार के पाँच वाक्य बनाइए।
- बोलचाल में प्रयोग होनेवाले शब्द और वाक्यांश 'दादी माँ' कहानी में है। इन शब्दों और वाक्यांशों से पता चलता है कि यह कहानी किसी विशेष क्षेत्र से संबंधित है। ऐसे शब्दों और वाक्यांशों में क्षेत्रीय बोलचाल की खूबियाँ होती हैं। उदाहरण के लिए-निकसार, बरहमा, उरिन, चिउड़ा, छौंका इत्यादि शब्दों को देखा जा सकता है। इन शब्दों का उच्चारण अन्य क्षेत्रीय बोलियों में अलग ढंग से होता है। जैसे-चिउड़ा को चिड़वा, चूड़त्र, पोहा और इसी तरह छौंका को छौंक, तड़का भी कहा जाता है। निकसार, उरिन और बरहमा शब्द क्रमशः उन्नयन और ब्रह्मा शब्द का क्षेत्रीय रूप है। इस प्रकार के दस शब्दों को बोलचाल में उपयोग होनेवाली भाषा/बोली से एकत्रित कीजिए और कक्षा में लिखकर दिखाइए।



क्या मैं ये कर सकता हूँ?	हाँ (✓)	नहीं (×)
1. पाठ का भाव अपने शब्दों में बता सकता हूँ। भावों से संबंधित बातचीत कर सकता हूँ।		
2. इस स्तर की गद्य सामग्री का भाव पढ़ कर समझ सकता हूँ।		
3. इस स्तर के गद्यांशों की व्याख्या करते हुए लिख सकता हूँ।		
4. पाठ के शब्दों को अपनी बातचीत में प्रयोग कर सकता हूँ।		
5. अपनी दादी माँ की कहानी बना सकता हूँ। उनका अभिनय कर सकता हूँ।		

